डॉ. शिवशंकर अवस्थी

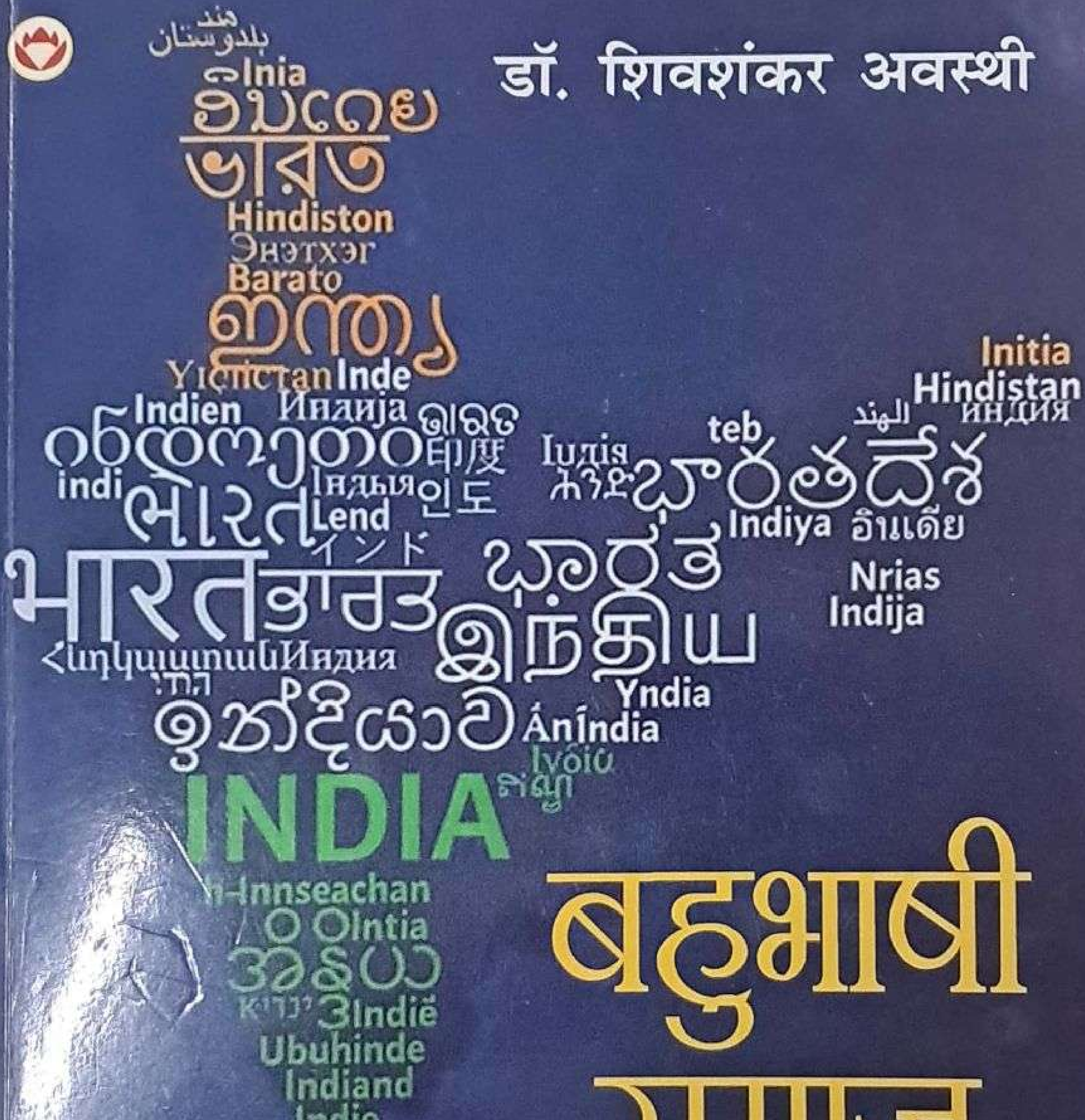

बहुभाषी समाज और अनुवाद

Scanned with CamScanner

बहुभाषी समाज और अनुवाद

अनुवाद इतिहास को सिद्ध करने का सबसे बड़ा मंत्र हैं। श्रुति परंपरा से ही अनुवाद का अंकुर हुआ होगा क्योंकि गुरु-शिष्यों ने अपने शिष्यों को उनकी अपनी सरल भाषा में भाष्य समझाया होगा। इसके बाद अनुवाद एक परंपरा बन गई और वर्तमान में यह विधा न केवल साहित्य को आत्मसात करने में सहायक है अपितु यह किसी भी राष्ट्र के समुचित व्यवहार को सविस्तार समझने में सहायक है। वैदिक साहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य सहित सभी विधाओं की पुस्तकों के देसी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद की उपलब्धता ने पश्चिमी देशों में भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार संचार और संवाद करने का अवसर प्रदान किया।

डॉ. शिवशंकर अवस्थी

राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा जगत में राजनीति विज्ञान के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध पीजी डी ए वी महाविद्यालय से सेवानिवृत्त हैं। राजनीति विज्ञान के साथ-साथ हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। अंतरराष्ट्रीय संस्था ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के वर्तमान में महासचिव और इंडियन रेप्रोग्राफिक राइट्स आर्गेनाईजेशन के उपाध्यक्ष हैं। दस शैक्षणिक पुस्तकों के अतिरिक्त आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में तेरह पुस्तकों की रचना की है। अनेक पुस्तकों का संपादन किया है। 'तुम्हें क्या मालूम' आपका काव्य संग्रह है। समय-समय पर विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कथा, कविताएं इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं। आपने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किए हैं और आपके द्वारा लिखित अनेक धारावाहिक, टेलीफिल्म और वृत्तचित्र दूरदर्शन पर प्रसारित हो चुके हैं। जर्मनी, फ्रांस, सऊदी अरब सहित अनेक देशों का भ्रमण करने वाले डॉ. शिवशंकर अवस्थी हिंदी अकादमी दिल्ली सहित अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संगठनों में विभिन्न पदों पर सुशोभित हुए हैं।

-प्रकाशक

डायमंड बुक्स
www.diamondbooks.in
9 788169 102834
₹ 250
HINDI BOOKS
NEW ARRIVALS
E-book available
Follow us

Scanned with CamScanner

विषय सूची

संपादक की कलम से — *3*

1. अनुवाद का स्वरूप एवं आवश्यकता — 15
प्रो. हरीश अरोड़ा

2. अनुवाद की उपादेयता और भूमिका — 24
डॉ. उषा दुबे

3. ज्ञान संसार का शिष्ट संवाहक : अनुवाद — 29
डॉ. अशोक पण्ड्या

4. अनुवाद और कृत्रिम मेधा — 32
डॉ. सी.जे.प्रसन्नकुमारी

5. ज्ञान समाज का निर्माण और अनुवाद — 37
प्रकाश काशिव

6. ज्ञान समाज की आधारशिला — 39
सुमन सामंत

7. भारतीय संगीत शास्त्र और अनुवाद — 42
प्रो. आन्शवना सक्सेना

8. बहुभाषी समाज में अनुवाद की भूमिका — 45
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

9. बहुभाषिक समाज में अनुवाद और उसका महत्व — 58
गीता विजयकुमार

10. बहुभाषिक समाज और अनुवाद — 62
नरेंद्र सिंह परिहार

11. एक सफल अनुवादक के गुण — 67
सलमा जमाल

CS Scanned with CamScanner

अध्याय-8

बहुभाषी समाज में अनुवाद की भूमिका

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

बीज शब्द:

अनुवाद, बहुभाषी समाज, सामाजिक सौहार्द, सांस्कृतिक संरक्षण, शिक्षा, वैश्विक सहभागिता, साहित्य और कला, कानूनी पहुँच

सारांश:

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों क्षेत्रीय बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसे बहुभाषी परिदृश्य में अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तक नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षिक सेतु का कार्य करता है। अनुवाद के माध्यम से नागरिकों को सरकारी सूचनाएँ, साहित्य, कला और शिक्षा मातृभाषा में उपलब्ध होती हैं, जिससे समाज में समान अवसर, समावेशिता और समझ सुनिश्चित होती है। अत:राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति बरकरार रहते हैं।

यह शोध-पत्र अनुवाद की बहुआयामी भूमिका पर केंद्रित है एक लघु प्रयास है, जिसमें संचार, सामाजिक सौहार्द, कानूनी और प्रशासनिक पहुँच, सांस्कृतिक संरक्षण, साहित्य और कला का संवर्धन, शिक्षा, आर्थिक और वैश्विक सहभागिता तथा बहुभाषी समाज में अनुवाद की चुनौतियाँ शामिल हैं। यह निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि अनुवाद बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक भारत में समाज, संस्कृति, राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति, सौहार्दपूर्व सहअस्तित्व और ज्ञान के प्रसार का आधार है।

CS Scanned with CamScanner

प्रस्तावना:

अनुवाद एक ऐसी तकनीक है जिसका आविष्कार मानव ने बहु भाषिक स्थिति की विडंबना से बचने के लिए किया था। इसका मूल रहस्य यह है कि यह मगर देश और विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाली शक्तिशाली कड़ी अथवा माध्यम है। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। यहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों क्षेत्रीय बोलियाँ बोली जाती हैं। यह भाषाई और सांस्कृतिक विविधता हमारे समाज की ताकत है। संवाद, ज्ञान और सूचना के आदान-प्रदान में यह शक्ति चुनौतीपूर्ण भी हो सकता है। ऐसे परिदृश्य में अनुवाद एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है, जो भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करके ज्ञान, सूचना, संस्कृति के प्रवाह एवं एकता को संभव बनाता है। प्राचीन भारत में अनुवाद ने ज्ञान और साहित्य के प्रसार में केंद्रीय भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, रामायण और महाभारत के क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद ने इन्हें व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया है। अनुवाद, मध्य काल में भक्ति आन्दोलन का लहर दक्षिण से उत्तर की ओर फैलने में अमूल्य योगदान प्रदान किया है। स्वतंत्रता पूर्व भारत में अनुवाद के माध्यम से ही हम स्वतंत्र हुए। आधुनिक भारत में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया है। शिक्षा, मीडिया, प्रशासन, स्वास्थ्य, व्यापार, साहित्य और कला, आदि जीवन के प्रत्येक पहलू में अनुवाद, नागरिकों को समान अवसर और सूचना तक व्यापक पहुँच प्रदान करता है।

अनुवाद के महत्व पर कई भारतीय व्यक्तित्वों के विचार :

महात्मा गांधी:

गांधीजी जनता तक अपने अहिंसा और आत्मनिर्भरता के विचारों को पहुँचाने के लिए भारतीय भाषाओं में अनुवाद के महत्व पर जोर देते थे। देश को एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा का दर्जा प्रदान किया। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा नामक संस्था का जन्म हुआ।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन:

डॉ. राधाकृष्णन ने पुस्तकों के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा था कि ये विभिन्न संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करती हैं, और अनुवाद इस प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है उनका मानना था कि अनुवाद के माध्यम से ही एक संस्कृति का ज्ञान और विचार दूसरी संस्कृति तक पहुँच पाता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ बढ़ती है।

Scanned with CamScanner

मुंशी प्रेमचंदः

मुंशी प्रेमचंद जैसे साहित्यिकारों ने भी अनुवाद को साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण माना है। प्रेमचंद ने भारतीय और विश्व साहित्य की कृतियों के अनुवाद को हिंदी साहित्य के कोष को समृद्ध करने का एक अहम माध्यम माना। उनका यह मत था कि अनुवाद से साहित्य के आयाम विस्तृत होते हैं और भाषा की अभिव्यंजना शक्ति भी बढ़ती है।

हरिवंश राय बच्चनः

कहा जाता है कि जवाहरलाल नेहरू और हरिवंश राय बच्चन के बीच भाषणों के अनुवाद को लेकर चर्चा होती थी, जो अनुवाद के बारीक महत्व को दर्शाता है। एक बार नेहरू और बच्चन के बीच भाषणों के अनुवाद को लेकर शब्दों की जंग छिड़ गई थी। यह प्रसंग बताता है कि उच्च स्तर पर भी विचारों के सही अनुवाद को लेकर संवेदनशीलता होती थी।

भारतीय साहित्य की परंपराः

भारतीय साहित्य में अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है। भारतीय राष्ट्रगान से जुड़ी एक महत्वपूर्ण जानकारी इस संदर्भ में सामने आती है। यथा:

भारत के स्वाधीनता आंदोलन के दौरान विभिन्न भारतीय भाषाओं के ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद हुआ, जिससे राष्ट्रीय चेतना को मजबूती मिली। रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं, विशेषकर 'गीतांजलि', का बड़े पैमाने पर अनुवाद किया गया।

इन सभी विचारों से स्पष्ट होता है कि अनुवाद को न केवल भाषाई ज़रूरत, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक आवश्यकता के रूप में देखा गया, जिसने भारतीय समाज को एकजुट करने, ज्ञान के प्रसार और भारत की अखंडता को कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अनुवाद का भारतीय परिप्रेक्ष्य में महत्व

1. संप्रेषण को सुगम बनानाः

अनुवाद भाषाओं के बीच संवाद को सुगम बनाता है। अनुवाद का प्राथमिक उद्देश्य भाषाओं के बीच सही और स्पष्ट संवाद स्थापित करना है। यह केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि अर्थ, भाव और सांस्कृतिक संदर्भ का स्थानांतरण भी है। अनुवाद भाषाओं

Scanned with CamScanner

के बीच संपर्क का पुल बनाता है और अर्थ व भावनाओं के सही आदान-प्रदान को संभव करता है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी इसकी एहमियत पर बल देते हुए कहते हैं :

"अनुवाद भाषा की सीमाओं को पार करता है, जिससे विचारों और संस्कृतियों का आदान-प्रदान संभव होता है।"

भारत में व्यापार, प्रशासन, मीडिया और शिक्षा में अनुवाद नागरिकों को उनकी मातृभाषा में जानकारी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, सरकारी सूचनाएँ, स्वास्थ्य या शिक्षा से जुड़ी योजनाएँ, यदि केवल अंग्रेजी में उपलब्ध हों, तो उनका लाभ सीमित वर्ग तक ही पहुँच सकता है। अनुवाद इन सूचनाओं को सभी तक पहुँचाने का प्रभावी साधन बन जाता है। इस सिलसिले को आगे बढ़ाकर तत्काल भारत में विभिन्न उदाहरण हमें उपलब्ध है। यथा:

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल और सरकारी अभियान जैसे 'जनधन योजना' और 'स्वच्छ भारत मिशन' की वेबसाइट और सूचना कई भारतीय भाषाओं में अनुवादित की जाती हैं ताकि देश के दूरदराज क्षेत्रों के नागरिक भी जानकारी समझ सकें और इसका सम्पूर्ण लाभ उठा सकें।

रेलवे टिकट बुकिंग पोर्टल (IRCTC) में हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओं का अनुवाद, यात्रियों के लिए सहज यात्रा सुनिश्चित करता है।

विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) की स्वास्थ्य संबंधी सूचनाओं का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद, जैसे मलेरिया, टीकाकरण अभियान, कोरोना से बचने कि जानकारी, आदि ग्रामीण क्षेत्रों में जागरुकता बढ़ाता है।

2. सामाजिक सौहार्द को प्रोत्साहित करना:

अनुवाद विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक समुदायों को जोड़ता है और समाज में सहिष्णुता, समझ और मेलजोल को बढ़ावा देता है। यह विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक समूहों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देता है। इससे सामाजिक समरसता, सौहार्द और शांति सुनिश्चित होती है। उदाहरण के स्वरूप, विभिन्न राज्यों में धार्मिक ग्रंथों और लोककथाओं का अनुवाद। सामुदायिक पत्रिकाओं में बहुभाषी संस्करण। बहुसांस्कृतिक फिल्मों और नाटकों का अनुवाद। इस सन्दर्भ में साहित्यिकार अरुंधति रॉय का विचार ध्यान देने योग्य है। यथा: "अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है; यह विचारों, संस्कृतियों और संवेदनाओं का सेतु है।"

भारत में विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाई समूहों के बीच संवाद अक्सर भाषा की

CS Scanned with CamScanner

बाधा से प्रभावित होता है। अनुवाद इन बाधाओं को दूर करता है और समुदायों के बीच सहयोग और आपसी समझ स्थापित करता है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय योजनाओं की जानकारी का सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद, विभिन्न भाषाई समूहों की समान भागीदारी और समानता सुनिश्चित करता है। "अनुवाद संस्कृतियों के बीच एक सेतु का काम करता है, जो विविध भाषाई समुदायों के बीच समझ और सद्भाव को बढ़ावा देता है।" यह वाक्य इस विचार को पुष्ट करता है कि अनुवाद सिर्फ शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यथा :

विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय त्योहारों जैसे दिवाली, ईद और क्रिसमस के संदेश और सरकारी शुभकामनाओं का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद, सामाजिक मेलजोल बढ़ाने में मदद करता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अनुवादित उद्घोषण और जानकारी, जैसे राष्ट्रीय नृत्य और संगीत महोत्सव, एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान, आदि विभिन्न भाषी दर्शकों को जोड़ते हैं।

बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम जैसे NCERT की पाठ्यपुस्तकों में अनुवादित साहित्य, छात्रों के बीच सांस्कृतिक समझ और सौहार्द को बढ़ावा देता है।

3. कानूनी और सरकारी पहुँच सुनिश्चित करना :

अनुवाद नागरिकों को सरकारी और कानूनी जानकारी तक पहुँच प्रदान करता है। अनुवाद सभी नागरिकों को उनके अधिकारों, सरकारी दस्तावेज, सरकारी योजनाओं और कानूनी प्रक्रियाओं, नीतियाँ तक पहुँच प्रदान करता है। भारत में बहुभाषी समाज के नागरिकों को न्याय और प्रशासन तक पहुँचाने में अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है। अदालत के दस्तावेज, सरकारी नोटिफिकेशन और योजनाओं की जानकारी यदि मातृभाषा में उपलब्ध हो, तो नागरिकों की भागीदारी और समझ बढ़ती है।

उदाहरण: मतदाता सूची और चुनाव सामग्री का बहुभाषी अनुवाद। न्यायालय की निर्देशिकाएँ और कानूनी नोटिस। सरकारी योजनाओं की लोकल भाषाओं में जानकारी। अंसारी हसन के शब्दों में "अनुवाद यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी एवं विधिक दस्तावेज़ सभी नागरिकों के लिए सुलभ हों, जिससे समावेशिता और समान सहभागिता को प्रोत्साहन मिलता है।"

उदाहरण: भारत का संविधान और नागरिक अधिकार विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिससे सभी नागरिक उनके अधिकार और कर्तव्य समझ सकें।

Scanned with CamScanner

आधार कार्ड और पैन कार्ड आवेदन प्रक्रियाएँ स्थानीय भाषाओं में अनुवादित हैं, ताकि सरकारी दस्तावेज़ों तक आम नागरिक की पहुँच बनी रहे।

राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) के फॉर्म और दिशानिर्देश सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवादित किए गए हैं।

4. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण :

अनुवाद सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने वाला वाहक है, जो विचारों और ग्रंथों को भाषाई सीमाओं से परे पहुँचाकर हमारी सांस्कृतिक स्मृति की रक्षा करता है। अनुवाद मौखिक और लिखित साहित्यिक परंपराओं को संरक्षित करता है और भाषाई विविधता को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में बनाए रखता है। यह पुरानी और आधुनिक परंपराओं, महाकाव्यों और ग्रंथों को लक्ष्य भाषाओं में जीवित रखता है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद, लोक कथाएँ, धार्मिक ग्रंथ और ऐतिहासिक दस्तावेज, अनुवाद के माध्यम से नई पीढ़ियों तक पहुँचते हैं। इससे भाषा और संस्कृति की विविधता संरक्षित रहती है। महाभारत और रामायण का क्षेत्रीय भाषाओं में सर्वदा नवीन दृष्टिकोण प्रदान कर किये गए अनुवाद अत्यंत फलप्रद साबित हुए हैं। युवा पीढ़ी को अपनी पम्परा के महत्त्व की ओर आकर्षित कर उसे नए रूप में जीवित रखने में अनुपम भूमिका निभाई है। विद्वानों के अनुसार "अनुवाद केवल भाषाई परिवर्तन नहीं है; यह हमारी सांस्कृतिक स्मृति को संरक्षित करता है।" यथा:

स्थानीय लोक कथाओं और गीतों का दस्तावेजीकरण, उसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद, जैसे बिहार की पितरा गीत और राजस्थान की लोककविताएँ, पीढ़ियों तक पहुँचती हैं।

संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद, जैसे चाणक्य नीतिशास्त्र या कार्तिकेय ग्रंथ, भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित करता है।

विभिन्न भाषाओं में ऐतिहासिक साहित्य का पुनर्प्रकाशन, आदि।

5. साहित्य और कला का संवर्धन:

अनुवाद साहित्य और कला के आदान-प्रदान का माध्यम है और रचनात्मक नवाचार को बढ़ावा देता है। अनुवाद विभिन्न भाषाओं के साहित्य और कला कार्यों को साझा मंच पर लाता है। लेखक और कलाकार अनुवाद के माध्यम से नई शैलियों, तकनीक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रेरित होते हैं। अनुवाद, साहित्य और कला का संवर्धन क

CS Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ाता है। रामायण और महाभारत, भक्ति कविताओं के संस्कृत और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में किए गए सारानुवाद और भावानुवाद, साथ ही भारतीय लोकगीतों और कविताओं के अनुवाद, इन्हें व्यापक रूप से प्रसारित करने में अमूल्य योगदान देते हैं। इन अनुवादों ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हुए, ज्ञान और भावनाओं के पुल का काम किया है।

उदाहरण: साहित्यिक कृतियाँ जैसे अमृता प्रीतम की कविताएँ पंजाबी से हिंदी और अंग्रेज़ी में अनूदित, जिससे उनकी साहित्यिक धरोहर पूरे देश और विदेश में पहुँची।

फ़िल्में और थिएटर जैसे 'दंगल' और 'सुभाष चंद्र बोस' पर बनी डॉक्यूमेंट्री का बहुभाषी अनुवाद, विभिन्न राज्यों और देशों में दर्शकों तक पहुँच सुनिश्चित करता है।

समकालीन भारतीय साहित्य का अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में अनुवाद। यथा: गीतांजलि श्री कृत 'रेत समाधि' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'टॉम्ब ऑफ सैंड' ने 2022 में अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीता। कन्नड़ लेखिका बानू मुश्ताक को उनकी लघु कहानी संग्रह 'इदय हणदे' का अंग्रेजी अनुवाद 'हार्ट लैंप' के लिए 2025 का अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है।

उक्त पुरस्कारों ने भारतीय साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है और इसे वैश्विक साहित्य की केंद्रीय धारा में स्थापित होने में मदद की है। अतः वास्तव में अनुवाद, साहित्य और कला को व्यापक स्तर पर साझा करने में यह अत्यंत मददगार साबित हुआ है।

6. शिक्षा में अनुवाद:

अनुवाद शैक्षिक सामग्री को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराता है। अनुवाद व्यवसाय और वैश्विक संचार को सक्षम बनाता है, जिससे भारतीय उत्पाद और सेवाएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचती हैं। अनुवाद में शिक्षा का महत्व बताते हुए रिता कोठारी कहती हैं "शिक्षा में अनुवाद यह सुनिश्चित करता है कि अध्ययन सामग्री सभी भाषाई समुदायों के लिए सुलभ हो।" मातृभाषा में पाठ्यपुस्तकें और ऑनलाइन पाठ्य सामग्री छात्रों को बेहतर समझ और सीखने का अवसर देती हैं। इससे बहुभाषी समाज में शिक्षा अधिक समावेशी बनती है।

उदाहरण: NCERT की पाठ्यपुस्तकें हिंदी, अंग्रेज़ी, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ में अनुवादित, जिससे छात्रों को मातृभाषा में पढ़ाई का अवसर मिलता है।

डिजिटल शिक्षा पोर्टल जैसे ePathshala, swayam, swadhyay. ODL, में

CS Scanned with CamScanner

बहुभाषी सामग्री, ग्रामीण और दूरदराज के छात्रों को जोड़ती है।

विज्ञान और गणित जैसे विषयों की शैक्षणिक सामग्री का अनुवाद, कठिन अवधारणाओं को स्थानीय भाषा में समझने में मदद करता है।

7. आर्थिक और वैश्विक सहभागिता का समर्थन :

नब्बे के अंतिम दशक और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में हुए सूचना-विस्फोट, उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण ने भारत की आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाई। इस दौरान अनुवाद ने अपने अनमोल योगदान के माध्यम से व्यवसाय और वैश्विक संवाद को संभव बनाया है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अनुवाद कंपनियों को बहुभाषी ग्राहक समूहों से प्रभावी संवाद स्थापित करने तथा वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सहायता प्रदान करता है। इसके माध्यम से भारतीय उत्पाद और सेवाएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच पा रही हैं। उदाहरणस्वरूप, ई-कॉमर्स वेबसाइटों, बहुभाषी विपणन सामग्री तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक रिपोर्टों में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और अप्रतिम है। रिटा कोठारी का यह कथन "अनुवाद व्यवसाय और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अत्यंत महत्वपूर्ण है।" सर्वदा सत्य है।

उदाहरण: ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म जैसे Flipkart और Amazon India विभिन्न भाषाओं में उत्पाद विवरण प्रदान करते हैं, जिससे ग्राहकों तक पहुँच आसान होती है।

विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों के ग्राहक सहायता, बेक ऑफिस, कॉल सेंटर्स, मार्केटिंग, जन संपर्क, आदि क्षेत्रों में अनुवाद नितांत आवश्यक हैं

भारतीय स्टार्टअप्स और IT कंपनियाँ अपने वेबसाइट और दस्तावेज़ बहुभाषी बनाकर वैश्विक बाजार में विस्तार करती हैं।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते और रिपोर्ट स्थानीय भाषाओं में अनुवादित होने से व्यापारियों और निवेशकों के लिए पारदर्शिता बढ़ती है।

बहुभाषी समाज में अनुवाद की चुनौतियाँ एवं संभावित समाधान :

"कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी" - यह कहावत भारत की भाषिक विविधता को अत्यंत सटीक रूप में प्रस्तुत करती है। भारत जैसा देश, जहाँ भाषा हर कुछ सौ किलोमीटर पर बदल जाती है, वहाँ अनुवाद केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, संवेदना और विचारों का जीवंत सेतु है।

बहुभाषी समाज में अनुवाद के माध्यम से संवाद, सहभागिता और एकता की भावना

CS Scanned with CamScanner

सुदृढ़ होती है। किंतु इतनी व्यापक भाषिक और सांस्कृतिक विविधता के बीच अनुवाद की प्रक्रिया अत्यंत जटिल एवं चुनौतीपूर्ण हो जाती है।

1. भाषिक विविधता और संरचनात्मक अंतर:

भारत में सैकड़ों भाषाएँ और उपभाषाएँ विद्यमान हैं, जिनकी व्याकरणिक संरचना, शब्द-रचना, और अभिव्यक्ति का ढंग एक-दूसरे से भिन्न है। इन सूक्ष्म भिन्नताओं के कारण किसी विचार का सटीक और समान प्रभाव वाला अनुवाद करना अनुवादक के लिए एक बड़ी चुनौती बन जाता है।

2. सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद:

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति की वाहक होती है। कहावतें, लोकोक्तियाँ, लोक-प्रयोग, धार्मिक प्रतीक और सांस्कृतिक प्रतीक किसी अन्य भाषा में समान प्रभाव से व्यक्त नहीं हो पाते। इस प्रकार अनुवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि संस्कृति का रूपांतरण बन जाता है।

उदाहरण: अंग्रेज़ी वाक्य "It's raining cats and dogs" का शाब्दिक अनुवाद "यहाँ बिल्लियाँ और कुत्ते बारिश कर रहे हैं" पूर्णतः अर्थहीन हो जाता है।

पश्चिमी संदर्भों जैसे "warm welcome", "baby shower", "drinks party" का भारतीय परिप्रेक्ष्य में अनुवाद करते समय विशेष सांस्कृतिक सतर्कता आवश्यक है।

इसी प्रकार, भारतीय परंपराओं से जुड़ी संकल्पनाएँ - पूजा-पाठ, गोदभराई, विवाह संस्कार आदि - का अन्य भाषाओं में अनुवाद करते समय अर्थ और संवेदना का संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है।

3. विशेषज्ञ शब्दावली का अभाव:

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कानून तथा प्रशासन जैसे क्षेत्रों में सटीक शब्दावली का अभाव अनुवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। कई बार समानार्थी शब्द तो मिल जाते हैं, पर उनका आशय, भावार्थ और प्रयोग संदर्भ से भिन्न होता है, जिससे अर्थ की विकृति हो जाती है।

4. भाव, लहजे और शैली की असमानता:

साहित्यिक और रचनात्मक अनुवादों में यह चुनौती और गहरी हो जाती है। केवल शब्दों का रूपांतरण पर्याप्त नहीं होता; भाव, लय, शैली और संवेदना का स्थानांतरण भी

CS Scanned with CamScanner

समान रूप से आवश्यक है। यही कारण है कि कविता, कथा या नाटक का अनुवाद अत्यंत कठिन कार्य माना जाता है।

5. प्रौद्योगिकी आधारित अनुवाद की सीमाएँ:

मशीन अनुवाद (Machine Translation) ने कार्य की गति अवश्य बढ़ाई है, परंतु ये तकनीकें सांस्कृतिक बारीकियों, भावनात्मक अर्थों और मुहावरों की सटीक व्याख्या करने में अभी भी सक्षम नहीं हैं। परिणामस्वरूप अनुवाद का अर्थ यांत्रिक तो हो जाता है, पर उसमें मानवीय संवेदना और संदर्भ का अभाव रहता है।

6. मानकीकरण की समस्या:

विभिन्न संस्थाओं या अनुवादकों द्वारा एक ही शब्द या वाक्यांश के भिन्न-भिन्न अनुवाद किए जाते हैं, जिससे अर्थ में असंगति और भ्रम उत्पन्न होता है। शब्द-दर-शब्द या शाब्दिक अनुवाद भी कई बार समस्या का कारण बनता है। उदाहरण के रूप में, ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी सूचनाओं का शाब्दिक अनुवाद जनता के लिए समझ से परे हो सकता है। इसलिए अनुवाद करते समय अर्थ, प्रसंग और भाषा की सहजता का ध्यान रखना अनिवार्य है।

7. दुर्लभ भाषाओं के लिए संसाधनों की कमी:

असमिया, मणिपुरी, या बोडो जैसी भाषाओं में उच्च-गुणवत्ता वाले अनुवादक और शब्द-संसाधन सीमित हैं। परिणामस्वरूप इन भाषाओं में अनुवाद की प्रक्रिया और भी कठिन हो जाती है, जिससे स्थानीय ज्ञान व साहित्य की पहुँच सीमित रह जाती है।

संभावित समाधान

भाषा और संस्कृति का समग्र प्रशिक्षण:

अनुवादक को केवल भाषायी दक्षता ही नहीं, बल्कि संबंधित समाज, संस्कृति और संदर्भ की गहरी समझ होनी चाहिए।

मानकीकृत शब्दावली और संसाधनों का निर्माण:

सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों को मिलकर प्रामाणिक, अद्यतन और सर्वमान्य शब्दकोश एवं डेटाबेस तैयार करने चाहिए।

CS Scanned with CamScanner

मानव और मशीन का संतुलित उपयोग:

मशीन अनुवाद का उपयोग प्रारंभिक स्तर पर किया जा सकता है, किंतु अंतिम संपादन मानव विशेषज्ञों द्वारा किया जाना आवश्यक है ताकि भाव और अर्थ की शुद्धता बनी रहे।

अनुवाद अध्ययन का सशक्तीकरण:

विश्वविद्यालयों में अनुवाद अध्ययन (Translation Studies) को प्रोत्साहन देकर व्यावसायिक और सांस्कृतिक अनुवादकों की नई पीढ़ी तैयार की जानी चाहिए।

स्थानीय भाषाओं का संवर्धन और समानता:

अनुवाद के माध्यम से सभी भाषाओं को समान सम्मान दिया जाए, ताकि बहुभाषिकता एकता में रूपांतरित हो सके।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता का विकास:

अनुवादक को यह समझना चाहिए कि वह केवल शब्द नहीं, बल्कि दो संस्कृतियों, दो दृष्टिकोणों और दो भाव-जगतों के बीच पुल का निर्माण कर रहा है।

निष्कर्ष: भारत जैसा बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज, जहाँ भाषा और संस्कृति दोनों ही असंख्य रूपों में विद्यमान हैं, वहाँ अनुवाद केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण, शिक्षा, साहित्य, सामाजिक सौहार्द और वैश्विक सहभागिता का अनिवार्य आधार है। अनुवाद केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं है; इसमें सांस्कृतिक और तकनीकी जटिलताएँ भी शामिल होती हैं। अनुवाद के माध्यम से नागरिक अपने अधिकारों, सरकारी नीतियों, योजनाओं और ज्ञान-स्रोतों तक समान रूप से पहुँच पाते हैं। यह न केवल भाषायी बाधाओं को तोड़ता है, बल्कि समाज में सहभागिता, पारदर्शिता और समावेशन की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

साथ ही, अनुवाद स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर सहयोग, परस्पर समझ तथा सांस्कृतिक समृद्धि को प्रोत्साहित करता है। यह विविधता के भीतर एकता का सूत्र बनकर भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक आत्मा को सजीव बनाए रखता है। स्पष्ट है कि बहुभाषी समाज में अनुवाद सशक्तिकरण, समानता और सामाजिक समरसता स्थापित करने का एक केंद्रीय स्तंभ है। यदि अनुवाद को आवश्यक प्राथमिकता, संसाधन और संस्थागत समर्थन प्राप्त हो, तो यह भारत की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक पहचान को स्थायित्व, सशक्तता और गौरव प्रदान करेगा।

CS Scanned with CamScanner

संदर्भ :

Gandhi, M. (1920s). Collected Works of Mahatma Gandhi. Navjivan Press.

Roy, A. (2018). W.G. Sebald Lecture, British Library. https://lithub.com

Exeter University, 2023; Chandran, 2018

Ansari, R., & Hasan, M. (2024). Language Policy and Multilingual Education in India. Sage Publications.

रिता कोठारी, 2017 संदर्भ: Kothari, R. (2017). A Multilingual Nation: Translation and Language Dynamic in India.

Baker, M. (2018). In Other Words: A Coursebook on Translation. Routledge.

Chandran, M. (2018). The Practice of Translation in India. Sahapedia.

Exeter University. (2023). Translation and Education: Bridging Linguistic Gaps. University of Exeter Press.

Devy, G. N. (1993). Of Many Heroes: An Indian Essay in Literary Historiography. Orient Blackswan. ISBN: 978-8171561561

Israel, H. (2021). Translation in India: Multilingual Practices and Cultural Histories of Texts. Translation Studies, 14(2), 125-132.

Kothari, R. (2017). A Multilingual Nation: Translation and Language Dynamic in India. Penguin Random House India. ISBN: 978-0143428063

Williams, J., & Chesterman, A. (2013). The Map: A Beginner's Guide to Doing Research in Translation Studies. Routledge.

Williams, A. N. (2018, August 27). International Trade as a Translation Specialization. American Translators Association. https://www.ata-divisions.org/FLD/2018/08/27/international-trade/

CS Scanned with CamScanner

Rai, G. (2025). Multilingualism and Multiliteracy in Primary Education in India. ResearchGate. https://www.researchgate.net/publication/331897009

Kothari, R. (2017). A Multilingual Nation: Translation and Language Dynamic in India. Penguin Random House India. ISBN: 978-0143428063

Scanned with CamScanner